कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) -

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन.....

दिनांक .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

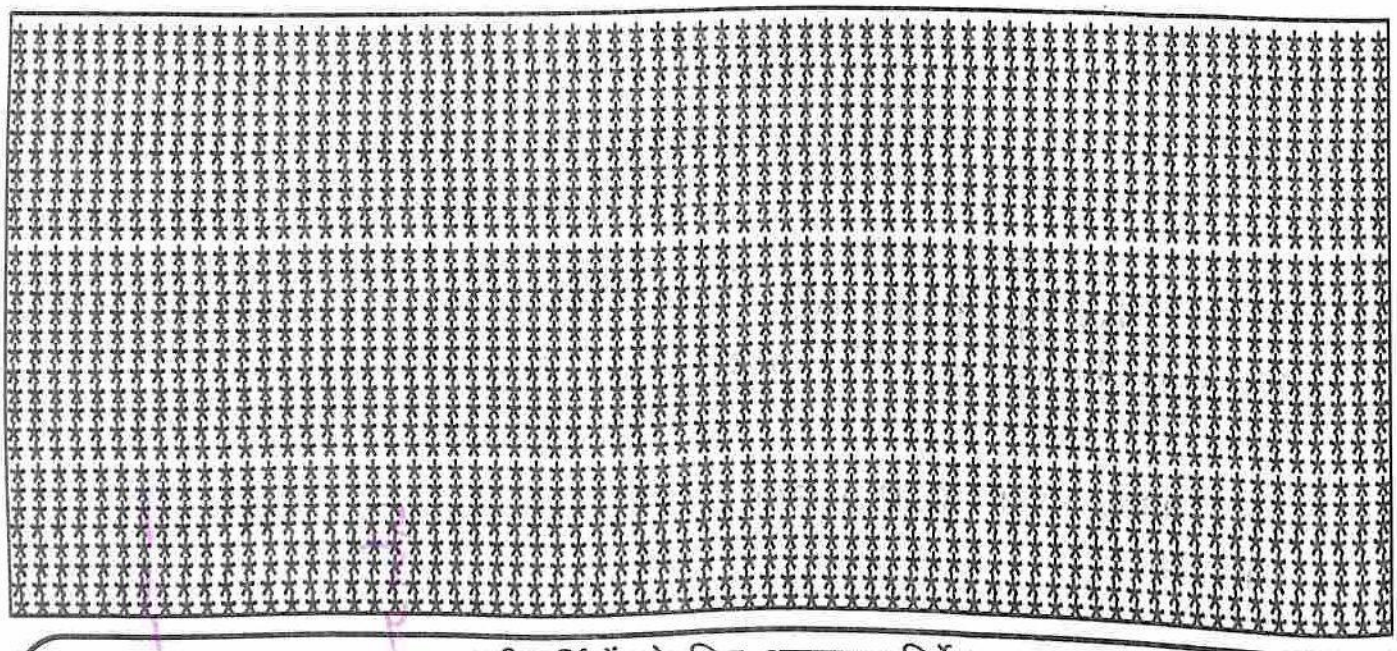

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1. प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश हमारी संस्कृत की पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के पाठ्य क्रमांक '6' से लिया गया है। इस पाठ का नाम 'महाराणा प्रताप:' है।

व्याख्या → उन्होंने (महाराणा प्रताप) ने पुन: सैन्य शक्ति के संग्रह का कार्य आरम्भ किया, उन्होंने बडी सेना की रचना की। उनकी सेना का मुगलशासन से स्वतन्त्रता के लिए युद्ध प्रारम्भ हुआ। अपने नियंत्रण से गए हुए अनेक भागों को पुन: नियंत्रण में कर लिया। उनमें मोही, गोगुन्दा, उदयपुर आदि मुख्य थे। अपने राज्य में शान्ति की स्थापना करने के लिए 'चावण्ड' नामक स्थान को अपनी राजधानी बनाया। उस काल में 'चावण्ड' स्थान स्थापत्यकला, ललितकला, वाणिज्य और विद्या का प्रमुख केन्द्र था।

विशेष → प्रस्तुत गद्यांश में महाराणा प्रताप के बारे में बताया गया है।

2. प्रसंग → प्रस्तुत पद्यांश हमारी संस्कृत की पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के पाठ्यक्रमांक '10' से लिया है। इस पाठ का नाम 'सुभाषित रत्नानि' है।

व्याख्या → प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि दुर्जनों की विद्या विवाद के लिए, धन घमण्ड के लिए व शक्ति दूसरों को पीडित करने के लिए होती है। लेकिन सज्जन लोग, दुर्जनों से विपरीत होते

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

है, उनकी विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए व शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है।

विशेष :- प्रस्तुत पद्यांश में सज्जन व दुर्जन लोगों के बीच विद्या, धन व शक्ति के आधार पर भेद बताया है।

3. प्रसंङ्ग : प्रस्तुत पद्यांश : अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना' इत्यस्य 'लोकहितं मम करणीयम्' इति शीर्षक पाठाद् उद्धृतम्। मूलतः पाठोऽयं कविपुंगवेन 'श्री धर भास्कर वर्णेकरः' विरचितायाः अस्ति।

व्याख्या: कविः कथयति यत् मया दुःखस्य गणना न कर्त्तव्यम्। स्वस्य सुखस्य विषये मननं न कर्त्तव्यम्। कर्म-क्षेत्रे तु शीघ्रता कर्तव्या। मया लोक-कल्याणं करणीयम्।

विशेष: अस्य पद्यांशस्य भाषा सरला सरसा च अस्ति।

4. प्रसंङ्ग : प्रस्तुत नाट्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना' इत्यस्य 'जृम्भस्व सिंह ! दन्तांस्ते गणयिष्ये' इति शीर्षक पाठाद् उद्धृतम्। मूलतः पाठोऽयं कविपुंगवेन 'कालिदासः' विरचितायाः अस्ति। एषः नाट्यांश 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' सप्तमअंङ्कात् उद्धृतम्।

द्वारा अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

व्याख्या →

प्रथमा → पुत्र ! अयम् सिंहशिशु त्यज । अहम् तुभ्यम् अन्यं क्रीडनकं प्रदास्यामि ।

बालः → कुत्रास्ति, तत् क्रीडनकं ददातु (इति कथयित्वा हस्तं प्रसारयति)

द्वितीया तापसी → हे सुव्रते ! अयं बालकः वाणीमात्रेण विरमयितुम समर्थः न अस्ति । भवती गच्छतु, मम कुटीरे मार्कण्डेयस्य ऋषिपुत्रस्य वर्णैः चित्रितः मृण्मयूरः अस्ति । तं मृण्मयूरः अस्य कृते आनयतु ।

प्रथमा तापसी → भवतु । (इति कथयित्वा गच्छति)

विशेष :→ अस्य नाट्यांशस्य भाषा सरला सरसा च अस्ति

5.

(i) "जय सुरभारति!" इति पाठस्य रचयिता 'डॉ. हरिरामाचार्यः' अस्ति ।

(ii) "संघे शक्तिः" इति पाठानुसारेण "अद्य प्रातरेव अनिष्टदर्शनं जातम्, न जाने किम् अनभिमतं दर्शयिष्यति, इति 'लघुपतनकः वायसः' कथितवान् ।

(iv) महाराणाप्रतापस्य राज्याभिषेकः गोगुन्दा ग्रामे अभवत् ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(v)	मरुप्रदेशे व्याप्तानां मृत्युभोजनं, बालविवाहः, नार्युत्पीडनं, यौतुकप्रथादीनां कुप्रथानां निवारणाय सदैव स्वामी केशवानन्दः सचेष्टः आसीत् ।"
	(vii)	महाराजः सूरजमल्लः महाराजः बदनसिंहस्य ज्येष्ठपुत्रः आसीत् ।
	(viii)	"यो यद्वपति बीजं हि लभते तादृशं फलम्" इति पाठानुसारेण कथं तेषां दायादानां मया प्रत्यपकारः कर्तव्यः' इति मण्डूकः गजदन्तेन चिन्तितम् ।
	5.	~~किम् परमो~~
	6.	किम् परमो धर्मः ?
	7.	पृथिव्यां कति रत्नानि सन्ति ?
	8.	एतेन कस्य न अपमानः ?
	9.	केषु अन्यतमः सूरजमल्लः आसीत् ?
	10.	पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।
	(i)	मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(ii)	प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तव: । तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥
	11. (क)	विश्वबन्धुत्वस्य आवश्यकता
	(ख)	
	(i)	दैनन्दिनव्यवहारे य: सहायता करोति स: बन्धु: भवति ।
	(ii)	समर्था: देशा: असमर्थान् देशान् प्रति उपेक्षाभावं प्रदर्शयन्ति
	(iii)	अधुना संसारे कलहस्य अशान्ते: च वातावरणम् अस्ति ।
	(iv)	प्रकृति: अपि सर्वेषु समत्वेन व्यवहरति ।
	(v)	सूर्यचन्द्रयो: प्रकाश: सर्वत्र समानरूपेण प्रसरति ।
	(ग)	
	(i)	अत्र कर्तृपदं 'मानवा:' अस्ति
	(ii)	अत्र विशेष्यपदं '~~आव~~ आवश्यकता' अस्ति ।
	(iii)	मानवा:
	(iv)	अधस्तात् → तस्मात्

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

12.
(i) स्वागतम् → सु + आगतम् → यण् सन्धि

(ii) दिग्गजः → दिक् + गजः → जश्त्व सन्धि

13.
(i) पौ + अनः → पवनः → अयादि सन्धि

(ii) रामः + च → रामश्च → सत्व सन्धि

14
(i) प्रतिवारं → वारं वारं प्रति → अव्ययीभाव समास

(ii) महाराजः → महान् राजा इति → कर्मधारय समास

(iii) माता च पिता च → मातापितरौ → द्वन्द्व समास

15.
(i) ग्रामं → द्वितीया विभक्ति → परितः के युग में

(ii) गीतया → तृतीया विभक्ति → सह के युग में

(iii) नगरात् → पंचमी विभक्ति → पृथक् के युग में

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	16 (i)	शंकमान :
	(ii)	पठन
	17 (i)	ज्ञानवान → ज्ञान + मतुप
	(ii)	चटका → चटक + टाप
	18 (i)	सूर्य: अग्निगोलक: इव प्रतिभाति
	(ii)	यत्र गच्छति तत्र तिष्ठति
	(iii)	कार्यस्य सहसा निर्णयं न करणीयम्
	19.	त्वम् पाठं लिखसि । त्वया पाठं लिख्यते ।
	20.	रामेण पुस्तकं पठ्यते । रामः पुस्तकं पठति ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

21. मया साधु: दृश्यते ।
अहम् साधुम् पश्यामि ।

22. (क) सीमा प्रात: दशाधिक नववादने विद्यालयं गच्छति ।

(ख) सा पुन: पञ्चाधिक त्रिवादने गृहं आगच्छति ।

23
(i) ~~बालिकातिस्त्र~~ प्रतिदिनम् उपवनं गच्छन्ति ।
तिस्त्र बालिका:

(ii) चतुष्पथे बलिवर्दा: कलहं कुर्वन्ति ।

(iii) शिष्य: गुरवे निवेदयति

24. सेवायाम्,
श्रीमन्त: प्रधानाचार्यमहोदया:,
राजकीय-आदर्श - उच्च माध्यमिक विद्यालय,
कञ्चनपुरम् ।
विषय:- पञ्चदिनस्य अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रं ।
महोदया:,
उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदनमस्ति । यत्
अहम् भवताम् विद्यालये दशम्या: कक्षाया: छात्र:
अस्मि । मम गृहे अत्यावश्यकं कार्यं अस्ति ।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अस्मात् कारणात् अहम् विद्यालये उपस्थितं न शक्नोमि । अतः प्रार्थना अस्ति यत् पञ्चदिनस्य अवकाशार्थं प्रदाय अनुगृहीष्यन्ति श्रीमन्तः ।

भवताम् आज्ञाकारी शिष्यः
नाम → सोमनाथः
कक्षा → दशमी

दिनाङ्कः
18 मार्च 2018

25. पुनीतः — सुरेश ! त्वं कुत्र गच्छसि ?

सुरेशः — पुनीत ! त्वम् अपि आगच्छ ।

पुनीतः — अरे ! तत् किं भवनम् अस्ति ।

सुरेशः — तत् चिकित्सालय अस्ति ॥ आवाम् अपि मातुलं भवनम् द्रष्टुं चलावः ।

पुनीतः — सः, केन रोगेण पीडितः अस्ति ।

सुरेशः — सः उच्चरक्तचापेन पीडितः अस्ति ॥

पुनीतः — ते श्वेतप्रावारकधारकाः, के सन्ति । ते किं कुर्वन्ति ?

सुरेशः — ते चिकित्सकाः सन्ति । ते उपचारम् कुर्वन्ति ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

25. सेवायाम्,
श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयाः,
राजकीय-आदर्श-उच्च माध्यमिक विद्यालय,
कञ्चनपुरम् ।
विषय :- पञ्चदिनस्य अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रं ।
महोदयाः,
उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदनम् अस्ति । यत् अहम् भवताम् विद्यालये दशम्याः कक्षायाः छात्रः अस्मि । मम गृहे अत्यावश्यकं कार्यम् अस्ति । अस्मात् कारणात् अहम् विद्यालये उपस्थितं न शक्नोमि ।
अतः प्रार्थना अस्ति यत् दिनाङ्कः 19-03-2018 तः 23-03-2018 दिनाङ्कपर्यन्तं अवकाशं प्रदाय अनुगृहीत्यन्ति श्रीमन्तः ।

भवदाज्ञाकारी शिष्यः
नाम → सोमनाथः
कक्षा → X

दिनाङ्कः
18 मार्च 2018

26 ~~माता पुत्र को~~
~~मुझे फल अच्छे लगते हैं।~~
~~महां गलानि रोचन्ते ।~~

(iv) कक्षा के बाहर शिक्षक हैं।
कक्षात् बहिः शिक्षकाः सन्ति ।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
(v)	उसके बिना तुम नहीं जाते हो ।
	तम विना त्वम न गच्छसि
(vi)	उनके साथ सुनीता आई ।
	तै: सह सुनीता आगच्छत ।
(iii)	तीन बालिकाएँ इधर देखती हैं।
	तिस्त्र बालिका: इत: पश्यन्ति
27. (i)	शीतल: पवन: मन्दं मन्दं प्रवहति ।
(ii)	सर्वत्र सुरभितकुसुमानां सुगन्ध: प्रसृत: अस्ति ।
(iii)	कुसुमाकर: वसन्त समागत: अस्ति ।
(iv)	भारते षट् ऋतव: भवन्ति ।
(v)	तेष्वयं वसन्त: श्रेष्ठ: अस्ति ।
(vi)	वसन्ते उद्यानानाम् शोभा दर्शनीया भवति
28. (i)	पुरा एकस्मिन वने एका चटका प्रतिवसति स्म ।
(ii)	कालेन तस्या: सन्तति: जाता ।
(iii)	एकदा कश्चित प्रमत्त: गज: तत्र आगतवान ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(iv)	वृक्षस्य अधः आगत्य तस्य शाखां शुण्डेन अत्रोटयत् ।
	(v)	चटकायाः नीडं भुवि अपतत् । तेन अण्डानि विशीर्णानि
	(vi)	अथ सा चटका व्यलपत् ।

—— समाप्त ——

3